समास

सम्+अस्+घञ्। एकपदीभावः समासः। समसननं समासः। लघुकरणं समासः। संक्षिप्तीकरणं समासः।

	समास-नाम	समास-परिभाषा	समास-परिभाषा	उदाहरण
0	केवलसमास।	विशेष-संज्ञा-विनिर्मुक्ततः केवलः।	संज्ञा आदि से मुक्त	भूतपूर्व (पहले हुआ), भूतार्थ (हुई बात), पूर्वोक्त (पहले कहा गया)
1	अव्ययीभाव।	प्रायेण-पूर्वपद-प्रधानोऽव्ययीभावः।	प्रायेण पूर्वपद प्रधान	यथास्थान, यथासमय, प्रतिदिन, प्रत्यङ्ग, आजीवन, निर्भय, यथाशीघ्र
2	तत्पुरुषसमास।	प्रायेणोत्तरपद-प्रधानस्तत्पुरुषः।	प्रायेण उत्तरपद प्रधान	मतदाता, रसोईघर, भारतरत्न, सत्याग्रह, विद्यालय, नीतिनिपुण। (व्याधिकरण)
3	बहुव्रीहिसमास।	प्रायेणान्यपद-प्रधानो बहुव्रीहिः।	प्रायेण अन्यपद प्रधान	नीलकण्ठ, दशानन, लम्बोदर, पीताम्बर, पङ्कज, मक्खीचूस, शूलपाणि
4	द्वन्द्वसमास।	प्रायेणोभयपद-प्रधानो द्वन्द्वः।	प्रायेण उभय (दोनों) पद प्रधान	माता-पिता, भाई-बहन, राम-कृष्ण, सुख-दुःख, अष्ट-विंशतिः। (चार्थे द्वन्द्वः)

1. अव्ययीभाव (अव्यय-अविकारी)

1.1	अव्यय (अविकारी) शब्द	यथा, आ, निर्, बे, ब, दर, प्रति, अति, अनु, ना, ला, नि, अति, हर, स, यावत्, उपरान्त (मरणोपरान्त), भर, अनुसार, पूर्वक, इति-आदि (इत्यादि)
1.2	आवृत्यात्मक / द्विरूक्त शब्द	लूटमलूट (लूट के बाद लूट), मारामारी, रातोंरात, दिनोंदिन, घर-घर, रोना-रोना, पल-पल, क्षण-क्षण, वन-वन, घड़ी-घड़ी, बार-बार, धीरे-धीरे
1.3	द्विरुक्त-शब्द (ही-आ-के बाद-पर-पे)	मन-ही-मन, काम-ही-काम, आराम-ही-आराम, धड़ाधर, सरासर, एक के बाद एक, घर के बाद घर, किताब पर किताब, काम पर काम, तह पर तह

2. तत्पुरुष

2.1	समानाधिकरण-तत्पुरुष	3.1.1). कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य) – (उपमान-उपमेय) – (रूपक) 3.1.2). द्विगु – (संख्यावाची-विशेषण - विशेष्य)
2.2	व्याधिकरण-तत्पुरुष	3.2.1). षड्विभक्ति-स्वरूप वाला
2.3	विशिष्ट-तत्पुरुष	3.3.1). नञ्-तत्पुरुष 3.3.2). प्रादि-तत्पुरुष 3.3.3). उपपद-तत्पुरुष 3.3.4). अलुक्-तत्पुरुष

2.1	समानाधिकरण-तत्पुरुष	3.1.1.	कर्मधारय-तत्पुरुष	कालीमिर्च, नीलकमल, पीताम्बर, नवयुवक, महापुरुष, चन्द्रवदन-मुखी, लौहपुरुष,कमलनयन, नरसिंह, चरणकमल
		3.1.2.	द्विगु-तत्पुरुष	त्रिभुवन, चौराहा, चवन्नी,नवग्रह (नवयुवक), अष्टाध्यायी, षट्रस, चतुर्वेद, चारपाई, पञ्चवटी, शताब्दी, त्रिफला, पंचतन्त्र
2.2	व्याधिकरण-तत्पुरुष	3.2.1.	द्वितीय-तत्पुरुष	मतदाता, पाकिटमार, गिरहकट, चिड़िमार, कठखोदवा, स्वर्गप्राप्त, गृहगत
	(तत्पुरुष-समास)	3.2.2.	तृतीया-तत्पुरुष	मुँहमाँगा, जलसिक्त, प्रेमसिक्त, रसभरा, जन्मजात, मदान्ध, देहचोर, श्रमजीवी, तुलसीकृत
		3.2.3.	चतुर्थी-तत्पुरुष	रसोईघर, हथकड़ी, सत्याग्रह, युद्धभूमि, लोकहितकारी, मार्गव्यय, स्नानघर, देशभक्ति,विद्यालय, देवालय
		3.2.4.	पञ्चमी-तत्पुरुष	बलहीन, गुणहीन, पद-पथभ्रष्ट, पापमुक्त, ईश्वरविमुख, लोकोत्तर, नेत्रहीन, जलरिक्त, जलशून्य, धर्मच्युत
		3.2.5.	षष्ठी-तत्पुरुष	प्रेमसागर, दिनचर्या, भारतरत्न, अन्नदाता, रामायण, गङ्गाजल, देवालय, विद्यालय, राजपुरूष, राष्ट्रपति
		3.2.6.	सप्तमी-तत्पुरुष	नीतिनिपुण, आत्मविश्वास, घुड़सवार, पुरुषोत्तम, कविश्रेष्ठ, शरणागत, नराधम, गृहप्रवेश, शास्त्रप्रवीण
2.3	विशिष्ट-तत्पुरुष	3.3.1.	नञ्--तत्पुरुष	अविद्या, अज्ञान, अमरण, अविवेक, - अनीश्वर, अनिच्छा, अनुपस्थित, अनाधिकृत
		3.3.2.	प्रादि-तत्पुरुष	कुपुरुष / कापुरुष, सुपुत्र, कुसमय, कुपथ, कदन्न (अव्ययीभाव)
		3.3.3.	उपपद-तत्पुरुष	कुम्भकारः, पङ्कजः, स्वर्णकारः, सामगः,धनदः, इन्द्रजित्, हितकरः, जलदः, अग्रसरः, कर्मकारः
		3.3.4.	अलुक्-तत्पुरुष	गेहेशूरः, युधिष्ठिरः, अन्तेवासी, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्, देवानांप्रियः (मूर्ख), सरसिजः (सरसि+जः), खेचरः (खे+चरः),

3. बहुव्रीहि

3.1	समानाधिकरण-बहुव्रीहि	पीताम्बर, अष्टाध्यायी, वज्रदेह, जीतेन्द्र, चतुर्भुज, दिगम्बर, चतुरानन, लम्बोदर, दशानन, त्रिफला, पंचतन्त्र, तिरंगा, पंजाब, पंचामृत, सिरदर्द,
3.2	व्याधिकरण-बहुव्रीहि	शूलपाणि, चन्द्रभाल, वीणापाणि, चन्द्रबदन (चन्द्रवदन-कर्मधारय-तत्पुरुष)
3.3	तुल्योग्य (सह) - बहुव्रीहि	सबल, सपरिवार, सगुण, सरूप, सचेतन, सदेह
3.4	व्यतिहार (द्वित्व) - बहुव्रीहि	मुक्का-मुक्की, बाता-बाती, लाठा-लाठी, डण्डा-डण्डी
3.5	प्रादि-बहुव्रीहि	बेरहम, निर्जीव, निर्धन (अव्यीभाव)

4. द्वन्द्व

4.1	इतरेतर-द्वन्द्व	(चार्थे द्वन्द्व – और)	धर्माधर्म (धर्म और अधर्म), भला-बुरा, पाप-पुण्य, भाई-बहन, देवासुर, शिव-पार्वती, सीता-राम, राधा-कृष्ण, दाल-भात
4.2	समाहार-द्वन्द्व	(वगैरह-आदि)	रुपया-पैसा (रुपया-पैसा वगैरा आदि), घर-आँगन, घर-द्वार, नाक-कान, नहाया-धोया, कपड़ा-लत्ता
4.3	वैकल्पिक-द्वन्द्व	(या-अथवा)	पाप-पुण्य (पाप या पुण्य), भला-बुरा, लाभालाभ, धर्माधर्म, थोड़ा-बहुत, ठण्डा-गरम
4.4	एकशेष-द्वन्द्व	(एक-शेष)	माता च पिता च – पितरौ / मातापितरौ, रामश्च रामश्च – रामौ, देवश्च देवश्च –देवौ, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणीश्च – ब्राह्मणौ, कुक्कुटश्च-कुक्कुटीश्च - कुक्कुटौ

समास-व्यवस्था

समस्तपद में एक से अधिक समास दृष्टिगोचर होने में वरीयता क्रम को महत्व दिया जाता है –

क. वरीयता-क्रममनुसार – (1). बहुव्रीहि। (2). कर्मधारय। (3). द्वन्द्व। (4). द्विगु। (5). तत्पुरुष। (6). अव्ययीभाव।

ख. समास-विग्रहानुसार – (1). तिरंगा (द्विगु) – तीन रंगों का समाहार। (2). तिरंगा (बहुव्रीहि) – तीन रंगों वाला अर्थात् भारत का राष्ट्र-ध्वज।